पिथौरा जनजाति कलाः भारत की विरासत

ख्याति अग्रवाल
विषय विशेषज्ञ
महाराजा छत्रसाल बुंदेलखंड
विश्वविद्यालय, छतरपुर (मध्य प्रदेश)

वरुण रावत
विद्यार्थी (इंटीनियर डिजाइनिंग)
महाराजा छत्रसाल बुंदेलखंड
विश्वविद्यालय, छतरपुर (मध्य प्रदेश)

Reference to this paper should be made as follows:

Received: 28.04.2025
Approved: 29.05.2025

ख्याति अग्रवाल
वरुण रावत

पिथौरा जनजाति कलाः भारत की विरासत

Vol. XVI, Sp.2Issue May 2025
Article No.21, Pg. 163-171

Online available at
https://anubooks.com/special-issues?url=jgv-si-2-rbd-college-bijnore-may-25

DOI: *https://doi.org/10.31995/jgv.2025.v16iSI005.021*

सारांश

पिथौरा चित्रकला एक पारंपरिक आदिवासी कला शैली है, जो मुख्य रूप से मध्य प्रदेश, गुजरात और राजस्थान के राठवा, भील एवं अन्य जनजातीय समुदायों में प्रचलित है। यह चित्रकला न केवल एक सौंदर्यात्मक अभिव्यक्ति है, बल्कि एक गहरी धार्मिक और सांस्कृतिक परंपरा से भी जुड़ी हुई है। यह चित्र सामान्यतः घरों की भीतरी दीवारों पर बनाए जाते हैं और इनमें पिथोरा देव, घोड़े, प्रकृति, पशु–पक्षी तथा लोककथाओं से जुड़े विविध प्रतीकात्मक चित्रण देखने को मिलते हैं। इन चित्रों को किसी विशेष अवसर जैसे विवाह, मन्नत पूरी होने या अन्य शुभ कार्यों के उपलक्ष्य में बनाया जाता है।

यह शोध–पत्र पिथौरा कला की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, शैलीगत विशेषताओं, धार्मिक महत्व तथा समकालीन परिप्रेक्ष्य में इसके संरक्षण और प्रचार–प्रसार का विश्लेषण करता है। शोध का उद्देश्य इस विलुप्त होती कला को पुनः जागरूकता की ओर लाना और इसकी सामाजिक–सांस्कृतिक भूमिका को समझना है।

मुख्य बिंदु

पिथौरा, चित्रकला, आदिवासी, घोड़े।

**This article has been peer-reviewed by the Review Committee of JGV.*

प्रस्तावना

पिथौरा चित्रकला एक पारंपरिक कला है जो गुजरात और राजस्थान के आदिवासी समुदायों, विशेष रूप से राठवा जनजाति से उत्पन्न हुई है। यह कला अपनी जीवंत और जटिल चित्रणों के लिए जानी जाती है, जो लोककथाओं, परंपराओं और प्रकृति को दर्शाती हैं। यह चित्रकला मुख्य रूप से घरों की दीवारों या गाँव के मंदिरों पर बनाई जाती है, जहाँ इसे महत्वपूर्ण घटनाओं जैसे विवाह या बच्चे के जन्म का जश्न मनाने और देवताओं से आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए उपयोग किया जाता है।

इसमें तेज, गहरे रंगों और प्रतीकात्मक रूपों का प्रयोग होता है। इसके विषयों में अक्सर मानव रूप, जानवर, पौधे और देवता होते हैं, जो सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विश्वासों को दर्शाने वाले पैटर्न में व्यवस्थित होते हैं।

यह वास्तव में सृष्टि के गहरे और समृद्ध मिथकों को दर्शाती है, जहाँ आदिवासी भगवान बाबा और उनके भतीजे पिथौरा के साथ धार्मिक और सांस्कृतिक विश्वासों का महत्वपूर्ण संबंध है। इन पेंटिंगों में न केवल आदिवासी कला और संस्कृति की झलक मिलती है, बल्कि यह विश्वास भी दर्शाया जाता है कि पिथौरा बाबा की उपस्थिति और उनकी पूजा से जीवन की कठिनाइयाँ हल हो सकती हैं।_(Chaudhary, 2021)

यह चित्रकला बनाने की प्रक्रिया जटिल और धार्मिक होती है। यह अक्सर कलाकारों के एक समूह द्वारा की जाती है, जिसमें समुदाय के एक बुजुर्ग व्यक्ति की मार्गदर्शना होती है, ताकि कला में आध्यात्मिक सार को सही तरीके से व्यक्त किया जा सके। इसकी केवल दृश्यात्मक अभिव्यक्ति नहीं होती, बल्कि इसमें एक गहरा आध्यात्मिक अर्थ होता है, जो अक्सर देवताओं को सुरक्षा और सुख–समृद्धि के लिए अर्पित किया जाता है।

पिथौरा कला की उत्पत्ति एवं इतिहास

यह कला एक प्राचीन आदिवासी चित्रकला है, जिसका उद्‌गम मुख्य रूप से गुजरात के आदिवासी क्षेत्रों, विशेष रूप से पंचमहल और छोटा उदयपुर जिलों से हुआ है। इन क्षेत्रों में राठवा, भील और भीलाला जनजातियाँ निवास करती हैं, जो प्रकृति और आध्यात्मिकता से गहरे जुड़ी हुई हैं। गुजरात के साथ–साथ राजस्थान और मध्य प्रदेश में भी इस कला का प्रचलन पाया जाता है। यह चित्रकला पिथौरा देव के नाम पर आधारित है, जो विवाह और समृद्धि के देवता माने जाते हैं। आदिवासी मान्यताओं के अनुसार, इसे बनाने से खुशहाली, अच्छी फसल, रोगों से सुरक्षा, निरोग जीवन और वैवाहिक समृद्धि प्राप्त होती है। इसे देवताओं को प्रसन्न करने और उनका आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए भेंटस्वरूप बनाया जाता है।

इस कला की परंपरा बहुत प्राचीन है और इसे आदिवासी जीवन शैली का महत्वपूर्ण हिस्सा माना जाता है। पुराने समय में यह कला घर की दीवारों पर चित्रित की जाती थी। चित्रों में प्रमुख रूप से घोड़े, सूर्य, चंद्रमा, वृक्ष, मानव आकृतियाँ और देवताओं का चित्रण किया जाता है। (Pithora Paintings- A vibrant Tribal Craft of Gujarat, 2024)

पिथौरा कला की विधि एवं प्रतीकात्मक अर्थ

यह कला प्रकृति, मानवीय जीवन और आध्यात्मिक आस्थाओं को दर्शाने के लिए जानी जाती है। यदि हम पौराणिक विधि की बात करें, तो इसे बनाने से पहले दीवार पर गाय के गोबर और मिट्टी के मिश्रण की परत चढ़ाई जाती है, जिसे ''लिखना'' कहा जाता है। इस परत के बाद दीवार पर सफेद चौक (चूने) का पाउडर और प्लास्टर लगाया जाता है।

https://doi.org/10.31995/jgv.2025.v16iSI005.021

तैयार सतह पर खनिज रंगों का उपयोग करके आकृतियाँ बनाई जाती हैं। ये रंग पाउडर के रूप में उपलब्ध होते हैं, जिन्हें दूध और महुआ के साथ मिलाकर तैयार किया जाता है। इन खनिज रंगों को मिलाने के लिए खाखरा पत्तों का प्रयोग किया जाता है। इन पत्तों की सहायता से एक प्रकार का कटोरा बनाया जाता है, जिसमें रंग मिलाए जाते हैं। साथ ही, खाखरा की तनी (डंठल) का उपयोग पारंपरिक ब्रश के रूप में किया जाता है।

हालांकि आज के समय में यह कागज, कपड़े या कैनवास पर भी बनाई जाने लगी है। इन आधुनिक माध्यमों में खनिज रंगों की बजाय प्रायः पोस्टर रंगों का उपयोग किया जाता है। (Pithora painting~Chotaudaipur- Craft Archive, n.d.)

इस चित्रकला में आठ घोड़े एक सीध में बनाए जाते हैं, जिनमें से एक पर पिथौरा देवता को विराजमान दिखाया जाता है। प्राकृतिक रंग जैसे नीला, पीला, नारंगी, लाल, हरा आदि का प्रयोग किया जाता है, जो चित्रों में जीवंतता लाते हैं। पिथौरा देव की बारात, उनके साथ अन्य देवी–देवताओं एवं जीवन से जुड़े प्रतीकों को दर्शाया जाता है। (गुप्ता 2023)

इस कला को विशाल दीवारों पर उकेरा जाता है, जो इसकी भव्यता और सांस्कृतिक महत्त्व को दर्शाती है। यह चित्रकला केवल एक सजावटी कला नहीं, बल्कि जनजातीय आस्था, परंपराओं और पौराणिक कथाओं का जीवंत प्रतिबिंब है।

चित्र–1

चित्र–2

स्रोत 1: https://images.app.goo.gl/xvkRzYvoP6occsQx5

स्रोत 2: https://gaatha.org/wp- content/uploads/significance_4-14.jpg

चित्रकला की संरचना

1. ऊपरी पंक्तियाँ:

- इन पंक्तियों में घुड़सवारों को दर्शाया जाता है, जो देवताओं, स्वर्गीय शक्तियों और पौराणिक प्राणियों का प्रतिनिधित्व करते हैं।
- ये आकृतियाँ समुदाय की धार्मिक मान्यताओं से जुड़ी होती हैं और आकाशीय लोक की दिव्यता को दर्शाती हैं।

2. निचली पंक्तियाँ:

- यह पंक्तियाँ पिथौरा की बारात को दर्शाती हैं, जिसमें विभिन्न देवता, राजा, सामाजिक चरित्र, पालतू जानवर आदि शामिल होते हैं।

- यह समुदाय की सामाजिक संरचना और उनके पारंपरिक रीति–रिवाजों का प्रतीक होती हैं।

3. अलंकृत लहराती रेखाः

- यह चित्र में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, क्योंकि यह ऊपरी और निचली पंक्तियों को अलग करती है।
- यह रेखा आकाश और पृथ्वी के बीच की सीमा का प्रतीक मानी जाती है।
- इसे कभी–कभी नदी या जीवनधारा के रूप में भी दर्शाया जाता है, जो प्रकृति और आध्यात्मिकता के संबंध को इंगित करती है।

प्रतीकात्मक अर्थः– इन तत्वों का गहरा सांस्कृतिक और प्रतीकात्मक अर्थ होता है, जो स्थानीय जीवन और धार्मिक विश्वासों को चित्रित करता है।

पिथौरा बापजीः– पिथौरा बापजी देवता हैं, और उनके चित्र में दो सफेद घोड़े सामने दिखाए जाते हैं। ये घोड़े बिना सवार के होते हैं और इनके चारों ओर रंगीन बिंदुओं की पंक्तियाँ होती हैं, जो उनके दिव्य रूप को दर्शाती हैं। सूर्य, चाँद और तारे का चित्रण भी इसके साथ होता है, जो आकाशीय शक्तियों का प्रतीक होते हैं।

रानी काजलः– रानी काजल का चित्रण मातृशक्ति का प्रतीक है, जिसमें घोड़ा और उसके बच्चे को सिंदूरी रंग में बिना काठी और सजावट के दर्शाया जाता है। यह रंग और चित्रण रानी काजल की शक्ति और उर्वरता को प्रतीकित करते हैं।

हथराज कुंवरः– यह चित्र आदिवासी समुदाय के जंगल के राजा के रूप में होता है, जिसमें जंगल, नदी, पहाड़ और अन्य प्राकृतिक तत्वों का उल्लेख होता है। यह देवता जंगल के बीच रहकर आदिवासी लोगों की रक्षा करते हैं।

बारामात्यः– बारह सिर वाला प्राणी, जो पिथौरा के दाहिने कोने पर दिखाया जाता है, एक अद्भुत और रहस्यमय जीव है। इसका प्रतीकात्मक अर्थ यह हो सकता है कि यह जीव हर दिशा से ताकत और सुरक्षा प्रदान करता है।

आकृतियाँ और अन्य प्रतीकः– इस कला में कई बार अलग–अलग आकृतियाँ और अन्य जानवरों का चित्रण किया जाता है। यह चित्रण प्राकृतिक और आकाशीय घटनाओं जैसे बारिश और मौसम से जुड़े होते हैं।

मेघानी घोड़ीः– यह आकृति मौसम, विशेषकर बारिश से जुड़ी होती है। घोड़ी के दो सिर होने से यह प्रकृति के दो पहलुओं को दर्शाती है... एक खाने और दूसरा संवाद करने के रूप में।

सिंहः– सिंह या बाघ की प्रतिमा इसमें शाही और शक्तिशाली प्रतीक के रूप में होती है, जो द्वार की रक्षा और सम्मान को प्रदर्शित करती है।

हाथीः– हाथी का चित्र समृद्धि और सफलता का प्रतीक होता है, और इसे पिथौरा के दरवाजे के पास रखा जाता है, जो स्वागत और आशीर्वाद का संकेत होता है।

भील महिलाएँः– इन चित्रों के माध्यम से जनजीवन और महिला पात्रों की भूमिका को दिखाया जाता है, जहाँ वे जल लाने वाली पनिहारिन के रूप में दर्शाई जाती हैं, जो देवताओं के लिए जल एकत्रित करती हैं।

https://doi.org/10.31995/jgv.2025.v16iSI005.021

कुआं–तालाबः– यह जलस्रोत और जीवन के महत्व को दर्शाता है, जिसमें जल के साथ जुड़े विभिन्न जीव–जंतु और मानव गतिविधियाँ भी चित्रित की जाती हैं।

बंदरः– बंदरों का चित्रण जीवन के चंचल और हरियाली के प्रतीक के रूप में होता है, साथ ही यह रंगों के माध्यम से उनके उत्साही और मस्ती भरे स्वभाव को व्यक्त करता है। (PITHORA PAINTING)

चित्र–3

स्रोत 3: https://images.app.goo.gl/cftSabiEDApPJfAWA

पिथौरा चित्रकला का महत्व एवं इससे जुड़े मिथक व किवदंतियाँ

यह शैली आदिवासी समुदायों में विशेष स्थान रखती है, और इसके चित्रों में पर्यावरण और प्रकृति के तत्वों का आदान–प्रदान दिखता है। ये चित्र वास्तविक चित्रण नहीं होते, बल्कि इनका उद्देश्य प्रकृति, संस्कृति और सामाजिक जीवन के संबंध को दर्शाना होता है। इसका धार्मिक और सामाजिक महत्व भी बहुत बड़ा है। यह चित्रकारी केवल कला नहीं है, बल्कि एक प्रकार का आशीर्वाद या शांति का प्रतीक मानी जाती है। जब कोई व्यक्ति बीमार होता है या किसी समस्या का समाधान चाहता है, तो वह तांत्रिक या जादूगर की सहायता लेकर बाबा पिथौरा से प्रार्थना करता है। यदि उसकी प्रार्थना स्वीकार हो जाती है, तो वह आभार व्यक्त करते हुए अपनी दीवारों पर पिथौरा पेंटिंग बनवाता है।

इसकी देख रेख तांत्रिक या पुजारी द्वारा की जाती है जो इस कला के धार्मिक पहलू को बनाए रखते हैं। पेंटिंग के बनने के बाद, एक उत्सव और पूजा का आयोजन किया जाता है, जो पूरी तरह से श्रद्धा और समर्पण का प्रतीक होता है। यह चित्र अक्सर घर की दहलीज या ओसारी (पहली दीवार के बाहर पर बनाए जाते हैं, क्योंकि वहाँ पिथौरा की उपस्थिति को शुभ माना जाता है। चित्र बनाने वाले कलाकारों को 'लकरा' कहा जाता है और जो पेंटिंग की देखभाल करते हैं, उन्हें 'झोकरा' कहा जाता है। पेंटिंग बनाने के दौरान, बड़वा (मुख्य पुजारी) अपने साथियों के साथ गायन और मंत्रोच्चारण करते हैं। यह प्रक्रिया एक विशेष अनुष्ठान के रूप में होती है, जहाँ प्रत्येक चित्र में हर विवरण को ध्यानपूर्वक और पूरी श्रद्धा के साथ चित्रित किया जाता है। चित्र बनने के बाद, बड़वा ध्यान में बैठकर यह जाँचते हैं कि क्या कोई चीज छूट तो नहीं गई है, और यदि कोई कमी होती है तो उसे पूरा किया जाता है।

चित्र–4

स्रोत 4: https://images.app.goo.gl/MAmuqjombigXmNkf7

इसका निर्माण आदिवासी समुदाय के पुरुषों द्वारा किया जाता है। यह कला विशेष रूप से पुरुषों के लिए होती है और उन्हें इसे सीखने का अधिकार होता है। इस कला को छोटे उम्र से ही परिवार के वरिष्ठ सदस्य उन्हें सिखाते हैं, ताकि यह कला पीढ़ी दर पीढ़ी जीवित रहे। इस प्रकार, पिथौरा पेंटिंग्स न केवल एक कला रूप है, बल्कि यह समाज, संस्कृति और धर्म का गहरा संगम भी है। यह आदिवासी समुदायों की आस्थाओं, विश्वासों और परंपराओं को जीवित रखने का एक महत्वपूर्ण तरीका है।

पिथौरा की कहानी भारतीय जनजातीय समुदायों की परंपराओं और लोककथाओं में गहरे तरीके से समाहित है, जहाँ यह पिथौरा पेंटिंग्स के माध्यम से मनाई जाती है। यह केवल एक मिथक नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक धरोहर है, जो पिथौरा देवी के उत्पत्ति और महत्त्व को समझाती है। कथा के अनुसार, देवताओं के राजा इंद्र के सात बहनें थीं। एक दिन, उनकी बहन रानी कदी कोयल वन में गईं, जहाँ उनकी मुलाकात राजा कंजराना से हुई, जो एक दिव्य प्राणी थे। वे दोनों एक गुप्त संबंध में लिप्त हो गए, और नौ महीने और नौ दिनों के गर्भधारण के बाद, रानी कदी कोयल ने एक बेटे को जन्म दिया। रानी कदी कोयल, जो अभी तक अविवाहित थीं, अपने भाई राजा इंद्र के क्रोध से डरकर बच्चे को छोड़ने का निर्णय लेती हैं। वह उसे एक धारा में बहा देती हैं, ताकि वह अपनी और अपने परिवार की प्रतिष्ठा की रक्षा कर सकें। ठीक उसी समय, रानी काजल और रानी मखेर, जो इंद्र की अन्य बहनें थीं, जल लेने के लिए धारा पर पहुंची। उन्हें बच्चे की आवाज सुनाई दी और वे उसे बहते हुए पाए। रानी काजल ने उस बच्चे के प्रति करुणा दिखाई और उसे अपने हाथों में उठाया। उन्होंने उसे आकाध्वट वृक्ष के फूलों से बने दूध को पिलाया और उसे सात पवित्र चीजों से स्नान कराया, जो एक आध्यात्मिक आशीर्वाद का प्रतीक था। उन्होंने बच्चे का नाम पिथौरा रखा और उसे महल में वापस ले आईं।

जैसे–जैसे पिथौरा बड़ा हुआ वह एक सुंदर और सक्षम युवा बन गया। एक दिन, खेलते समय उसने रानी काजल का मिट्टी का बर्तन तोड़ दिया। इससे रानी काजल क्रोधित हो गईं और उन्होंने उसे डांटा, साथ ही यह कहा, "तुम्हारे मामा के पास पूरे राज्य का अधिकार है"। यह शब्द पिथौरा के दिल में गहरे उतर गए। उसने अपनी पहचान जानने का निश्चय किया। अपनी उत्पत्ति की सच्चाई जानने के लिए, पिथौरा राजा इंद्र

https://doi.org/10.31995/jgv.2025.v16iSI005.021

के दरबार में गया। वहाँ उसने खुद को प्रस्तुत किया और अपनी कहानी सुनाई। राजा इंद्र ने पिथौरा की कहानी सुनी और उसे खुशी–खुशी अपने परिवार में स्वीकार किया। उन्होंने पिथौरा के लिए एक उपयुक्त कन्या का चयन करने का वचन दिया।

हालांकि, पिथौरा एक समझदार और जिम्मेदार व्यक्ति था, उसे अपने पिता के बारे में जानने की आवश्यकता महसूस हुई। इसके लिए राजा इंद्र ने एक भव्य दरबार का आयोजन किया, जिसमें सभी देवी–देवताओं, राजाओं, रानियों, उच्च अधिकारियों और सम्मानित नागरिकों को आमंत्रित किया गया। इस भव्य सभा में पिथौरा ने राजा कंजराना को अपने पिता के रूप में पहचान लिया। इस उद्घाटन के बाद, सभी देवता और लोग खुशी से झूम उठे और यह एक दिव्य एकता का प्रतीक बन गया।

देवताओं के आशीर्वाद से, पिथौरा का विवाह पिथोरी से हुआ। यह विवाह भव्य रूप से आयोजित किया गया, जिसमें देवता और देवियाँ घोड़े और हाथियों पर सवार होकर पहुंचे। देवताओं का यह भव्य जुलूस और उनकी उपस्थिति पिथौरा पेंटिंग्स में दर्शाई जाती है, जहाँ देवता और देवियाँ विशेष रूप से सजाए गए घोड़ों और हाथियों पर सवार होते हैं साथ ही पिथौरा और पिथोरी भी उपस्थित होते हैं।

पिथौरा की कहानी केवल एक दिव्य वंश परंपरा की कहानी नहीं है, बल्कि यह एकता, परिवार और दिव्य हस्तक्षेप का प्रतीक भी है। पिथौरा पेंटिंग्स की जटिल चित्रकारी इस पवित्र मिलन को याद करने के लिए बनाई जाती है, जिसमें देवता देवियाँ और दिव्य जुलूस को रंग–बिरंगे और प्रतीकात्मक चित्रों में दर्शाया जाता है। ये चित्रकारी आज भी जनजातीय समुदायों में एक जीवित परंपरा के रूप में हैं। (Pithora Painting~ Chotaudaipur- Craft Archive, 2024)

पिथौरा पेंटिंग का वर्तमान परिप्रेक्ष्य

यह पेंटिंग, जो कि गुजरात और मध्य प्रदेश के आदिवासी समुदायों, विशेष रूप से राठवा और भील जनजातियों से उत्पन्न हुई पारंपरिक कला का रूप है, वर्तमान परिप्रेक्ष्य में विकसित हो रही है जबकि यह अपनी सांस्कृतिक प्रतीकात्मकता और कहानी कहने की जड़ों को बनाए रखते हुए बदल रही है। यहाँ बताया गया है कि पिथौरा पेंटिंग किस तरह से बदल रही है:

विषयों का आधुनिकीकरण: पारंपरिक रूप से, यह पेंटिंग धार्मिक और सामाजिक रीति–रिवाजों से जुड़ी होती थी, जो अक्सर देवताओं, देवियों और महत्वपूर्ण सामुदायिक घटनाओं की कहानियों को दर्शाती थी। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में, कलाकार आधुनिक विषयों को शामिल करने लगे हैं, जैसे शहरी जीवन, प्रकृति संरक्षण और सामाजिक मुद्दे। उदाहरण के लिए, समकालीन पिथौरा कलाकार शहरी विकास, तकनीकी उन्नति और बदलती जीवनशैली को चित्रित कर सकते हैं, जो पारंपरिक और आधुनिक वास्तविकताओं का मिश्रण होता है।

व्यावसायिकीकरण और व्यापक पहचान: यह पेंटिंग, जो पहले मुख्य रूप से धार्मिक और अनुष्ठानिक उद्देश्यों के लिए बनाई जाती थी, अब व्यावसायिक गैलरी और बाजारों में अपनी जगह बना चुकी है। कलाकार अब अपनी कृतियों को शहरी केंद्रों और अंतरराष्ट्रीय मंचों पर प्रदर्शित करते हैं, जिससे यह कला पारंपरिक सेटिंग्स से बाहर एक नई पहचान हासिल कर रही है। इसके परिणामस्वरूप, पिथौरा कला को अब भारत और दुनिया भर में एक नया दर्शक वर्ग मिला है। (The Rich World of Pithora Painting and its Cultural Significance, 2024)

नवाचारात्मक माध्यमः पारंपरिक रूप से, यह पेंटिंग्स दीवारों पर या सामुदायिक स्थानों की दीवारों पर की जाती थीं, लेकिन समकालीन कलाकार अब विभिन्न सतहों जैसे कैनवास, कागज और यहाँ तक कि डिजिटल माध्यमों पर भी प्रयोग कर रहे हैं।

समकालीन कला के साथ मिलनः कई समकालीन कलाकार पिथौरा तकनीकों को आधुनिक कला शैलियों जैसे अमूर्त, पॉप कला या न्यूनतम तत्वों के साथ जोड़ रहे हैं। इस मिश्रण ने कला में एक नई प्रयोगात्मकता और रचनात्मकता को जन्म दिया है, जिससे यह कला युवा पीढ़ी और समकालीन कला संग्रहकर्ताओं के बीच प्रासंगिक हो रही है।

संरक्षण और पुनरुद्धारः यह कला की बढ़ती पहचान ने इसके अद्वितीय रूप को संरक्षित करने में मदद की है। कई कलाकार, गैर–सरकारी संगठन और सांस्कृतिक संस्थाएँ इस पारंपरिक कला रूप को आने वाली पीढ़ियों तक पहुँचाने के लिए काम कर रही हैं, और कुछ तो प्रशिक्षण कार्यक्रमों और कार्यशालाओं के माध्यम से इस कारीगरी को पुनर्जीवित करने का प्रयास कर रहे है।

चित्र–5

चित्र–6

स्रोत 5: https://issuu.com/devanshigandhi/docs/pithora_craft_documentation/s/18298625

स्रोत 6: https://issuu.com/devanshigandhi/docs/pithora_craft_documentation/s/18298625

निष्कर्ष

पिथोरा चित्रकला भारतीय आदिवासी संस्कृति की एक समृद्ध और जीवंत परंपरा है, जो भील और राठवा जनजातियों की धार्मिक आस्था, जीवनशैली और प्रकृति के साथ सामंजस्य को दर्शाती है। यह चित्रकला न केवल दीवारों की शोभा बढ़ाती है, बल्कि सामाजिक और आध्यात्मिक विश्वासों को भी जीवंत रूप देती है। आज यह कला न केवल स्थानीय पहचान का प्रतीक है, बल्कि वैश्विक स्तर पर भारतीय लोककला की अनोखी छवि भी प्रस्तुत करती है। अतः पिथोरा चित्रकला हमारी सांस्कृतिक विरासत को सहेजने और समझने का एक महत्वपूर्ण माध्यम है।

संदर्भ

1. Chaudhary, Anju. (2021). *Fundamentals of Visual Art.* Meerut: Anu Books.
2. *PITHORA PAINTING.* (n.d.). Retrieved from The National Institute of Open School: https://www.nios.ac.in/media/documents/244_Folk_art/Folk_Art_Practical_L-4.pdf

https://doi.org/10.31995/jgv.2025.v16iSI005.021

3. *Pithora Painting~ Chotaudaipur- Craft Archive*. (2024, May). Retrieved from Indian Craft Archive:https://gaatha.org/Craft-of-India/study-pithora-painting-gujarat/#:~:text=A%20Pithora%20is%20however%2C%20considered,process%20is%20called%20'Lipna'
4. *Pithora painting~Chotaudaipur- Craft Archive*. (n.d.). Retrieved from Indian Craft Archive: https://gaatha.org/Craft-of-India/study-pithora-painting-gujarat/
5. *Pithora Paintings- A vibrant Tribal Craft of Gujarat*. (2024, october Tuesday). Retrieved from Hastkala setu: https://hastkala.gujarat.gov.in/blogs/public/details/pithora-paintings—a-vibrant-tribal-craft-of-gujarat
6. *The Rich World of Pithora Painting and its Cultural Significance*. (2024, november Saturday). Retrieved from rainbowsandhues.com: https://rainbowsandhues.com/the-rich-world-of-pithora-painting-and-its-cultural-significance/#:~:text=Famous%20Artists%20and%20the%20Revival,audience%20without%20compromising%20its%20authenticity.
7. गुप्ता, डी॰ ह. (2023). देशज कला, राजस्थान, राजस्थान ग्रंथ अकादमी।